CHAPTER 14

कच्चा चिट्ठा

PAGE 98, प्रश्न और अभ्यास

12:1:14:प्रश्न और अभ्यास :1

पसोवा की प्रसिद्धि का क्या कारण था और लेखक वहाँ क्यों जाना चाहता था?

उत्तर - पसोवा में जैन धर्म का तीर्थस्थल है। यहाँ पर जैन समुदाय का बहुत बड़ा मेला लगता था। यह भी कहा जाता था की सम्राट अशोक के द्वारा यहाँ पर स्तूप बनवाया गया था, जिसमें बुधदेव के नाख़ून और बाल रखे गए थे। लेखक वहां जाना चाहता था क्योँकि वह सोच रहा था की शायद वहां उसे पुरातत्व के कुछ निशान मिल जाए जैसे सिक्के, मूर्ति इत्यादि।

12:1:14:प्रश्न और अभ्यास :2

"मैं कहीं जाता हूँ तो 'छूँछे' हाथ नही लौटता" से क्या तात्पर्य है? लेखक कौशांबी लौटते हुए अपने साथ क्या-क्या लाया?

उत्तर - इस पंक्ति का आशय है की लेखक किसी भी जगह से खाली हाथ वापस नहीं आता है। वह पुरातत्व से जुड़ी कोई महत्वपूर्ण वस्तु लेकर ही आता है। गावं से आते समय लेखक को मनके, मृणमूर्तियाँ, पुराने समय के सिक्के आदि मिले थे। कौशाम्बी आते वक्त लेखक बीस सेर के वजन की शिव जी की मूर्ति लेकर आया जो उसे पेड़ के नीचे पड़े पत्थरों के ढेर पर मिली थी।

PAGE 99

12:1:14:प्रश्न और अभ्यास :3

"चांद्रायण व्रत करती हुई बिल्ली के सामने एक चूहा स्वयं आ जाए तो बेचारी को अपना कर्तव्य पालन करना ही पड़ता है।"- लेखक ने यह वाक्य किस संदर्भ में कहा और क्यों?

उत्तर - यह बात लेखक ने तब कही जब पेड़ो के नीचे पत्थरों के ढेर पर उन्हें शिव जी की मूर्ति मिली। लेखक बताने के लिए इस पंक्ति का प्रयोग किया है। वह कहते है कि जैसे

बिल्ली चन्द्रायण का व्रत करती है ताकि उसके सारे पाप धूल जाए, परन्तु चूहे के सामने आने पर वह व्रत भूल जाती है । उसी प्रकार कवि मूर्ति उठकर नहीं ले जाना चाहता था परन्तु मूर्ति का महत्व समझ कर वह उसे उठा लाता है।

12:1:14:प्रश्न और अभ्यास :4

"अपना सोना खोटा तो परखवैया का कौन दोस?" से लेखक का क्या तात्पर्य है?

उत्तर - इस पंक्ति से लेखक का तात्पर्य है की जब अपने वस्तु में ही दोष हो तो परखने वाले को दोष नहीं देना चाहिए। परखने वाला तो वही दोष निकालता है जो उस वस्तु में होती है। अतः, हमे परखने वाले को नहीं अपितु अपनी वस्तु को दोष देना चाहिए।

12:1:14:प्रश्न और अभ्यास :5

गाँववालों ने उपवास क्यों रखा और उसे कब तोड़ा? दोनों प्रसंगों को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - गावं वालो ने व्रत तब रखा जब उन्हें पता चला की शिव जी की मूर्ति चोरी हो गयी है। उन्होंने प्रण किया की जब तक शिव की मूर्ति वापस नहीं आती, वे व्रत करेंगे। गावंवालों को लेखक पर संदेह था इस लिए सारे गावं वाले लेखक के पास आये और मूर्ति के बारे में पूछा। लेखक ने भी मूर्ति ससम्मान वापस कर दी। इसके बाद गावं वालों ने व्रत तोड़ा।

12:1:14:प्रश्न और अभ्यास :6

लेखक बुढ़िया से बोधिसत्व की आठ फुट लंबी सुंदर मूर्ति प्राप्त करने में कैसे सफल हुआ?

उत्तर - कौशाम्बी के गावों में घूमते हुए एक खेत में लेखक को आठ फुट लम्बी बोधिसत्व की मूर्ति दिखाई दी। तभी उस खेत की मालकिन आ गयी जो लालची थी। लेखक ने २ रूपये देकर खेत मालकिन से वो मूर्ति प्राप्त की।

12:1:14:प्रश्न और अभ्यास :7

"ईमान! ऐसी कोई चीज़ मेरे पास हुई नहीं तो उसके डिगने का कोई सवाल नहीं उठता। यदि होता तो इतना बड़ा संग्रह बिना

पैसा-कौड़ी के हो ही नहीं सकता।" - के माध्यम से लेखक क्या कहना चाहता है?

उत्तर - लेखक कहना चाहता है जो वस्तु किसी के है ही नहीं उसे वो खो नहीं सकता है। इसी प्रकार लेखक के पास ईमान नहीं है इसलिए उसे अपना ईमान खोने का डर नहीं है। अगर उसके पास ईमान होता तो बिना पैसे के वह इतना बड़ा संग्रहालय नहीं खोल पाता।

12:1:14:प्रश्न और अभ्यास :8

दो रुपए में प्राप्त बोधिसत्व की मूर्ति पर दस हज़ार रुपए क्यों न्यौछावर किए जा रहे थे?

उत्तर - बोधिसत्व की इस मूर्ति का बहुत ही महत्व था जो इस प्रकार हैं :-
(क) बोधिसत्व की जितनी भी मूर्तियाँ पहले मिली थी उनसे से यह सब पुरानी थी ।
(ख) यह कुषाण सम्राट कनिष्क के समय की थी ।

(ग) कुषाण सम्राट कनिष्क के राज्यकाल के दूसरे साल में वहां स्थापित की गयी थी ।

(घ) सबसे बड़ी बात यह थी कि वह मूर्ति कहीं से भी खंडित नहीं थी ।

12:1:14:प्रश्न और अभ्यास :9

भद्रमथ शिलालेख की क्षतिपूर्ति कैसे हुई? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - भद्रमथ शिलालेख की क्षतिपूर्ति गुलज़ार मियां के घर के सामने के कुएं के चबूतरे पर स्थित चार खम्भों से हुयी। इन खम्भों पर ब्राह्मी अक्षरों में लिखा हुआ था। लेखक के कहने पर गुलजार मियां खम्भों को खुदवा कर लेखक को दे दिए।

12:1:14:प्रश्न और अभ्यास :10

लेखक अपने संग्रहालय के निर्माण में किन -किन के प्रति अपना आभार प्रकट करता है और किसे अपने संग्रहालय का अभिभावक बनाकर निश्चित होता है?

उत्तर - लेखक इनके प्रति अपना आभार प्रकट करता है :-

(क) डॉ.पन्नालाल ,आई.सी.एस

(ख) डॉ ताराचंद

(ग) पंडित जवाहर लाल नेहरु

(घ) मास्टर साठे और मूता

(ड) रायबहादुर कामता प्रसाद

(च) हिज हाईनेस श्री महेंद्र सिंह जू देव नागौद नरेश

(छ) सुयोग्य दीवान लाल भाग्वेन्द्र सिंह

(ज) स्वामिभक्त अर्दली जगदेव

डॉ सतीशचंद्र काला को अपने संग्रहालय का अभिभावक बनाकर लेखक निश्चिन्त हो गया ।

भाषा शिल्प

12:1:14:प्रश्न और अभ्यास - भाषा शिल्प :1

निम्नलिखित का अर्थ स्पष्ट कीजिए

(क) इक्के को ठीक कर लिया

(ख) कील काँटे से दुरस्त था।

(ग) मेरे मस्तक पर हस्बमामूल चंदन था।

(घ) सरखाब का पर

उत्तर -

(**क**) घोडा गाडी को कही जाने के लिए तय कर लिया।

(**ख**) अभी का समय कष्टदायक है परन्तु यह पूर्ववत समय से कम कष्टदायक है।

(**ग**) मेरे माथे का तिलक पहले जैसा था।

(**घ**) स्वयं को अतिविशिष्ट मानना।

12:1:14:प्रश्न और अभ्यास - भाषा शिल्प :2

लोकोक्तियों का संदर्भ सहित अर्थ स्पष्ट कीजिए।

(क) चोर की दाढ़ी में तिनका

(ख) ना जाने केहि भेष में नारायण मिल जाएँ

(घ) यह म्याऊँ का ठौर था

उत्तर -

(**क**) ऐसी हरकत करना जिस से पता चल जाए की गलती उसी ने की है।

(**ख**) सभी लोगो का सम्मान करना चाहिए। पता नहीं किस भेष में भगवन दर्शन दे दें।

(**ग**) इधर -उधर घुमने की ज़रुरत कहाँ है, यहीं तो म्याऊं का ठौर है ।